काशी योग एवं मूल्य शिक्षा संस्था

के उपक्रम

आचार्य टी. आर. वी. मूर्ति दर्शन एवं संस्कृति अध्ययन पीठ

द्वारा आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

'पर्यावरण चिंतन के आलोक में संपोष्य विकास'

18-19 अक्टूबर 2026

स्थान: स्वामी शांतानंद सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, काकुन, जनपद- महोबा, उत्तर प्रदेश

संक्षिप्त रिपोर्ट

काशी योग एवं मूल्य शिक्षा संस्था ने **"पर्यावरण चिंतन के आलोक में संपोष्य विकास"** विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला (18-19 अक्टूबर 2026) आयोजित करने की एक महत्त्वपूर्ण पहल की। उक्त कार्यशाला में पर्यावरण संरक्षण, जल संकट, शिक्षा, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों तथा ग्रामीण विकास से जुड़े महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। संगोष्ठी में शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, पत्रकारों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की।





प्रथम दिवस का शुभारंभ प्रातः 8:30 बजे यज्ञ-हवन से हुआ। इसके पश्चात प्रातः 10:30 बजे प्रोफेसर सिद्धनाथ उपाध्याय,पूर्व निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान(काहिविवि), प्रोफेसर प्रदीप कुमार मिश्र, वरिष्ठ आचार्य, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान(काहिविवि) एवं पूर्व कुलपति अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, श्री मनोज तिवारी, सामाजिक कार्यकर्ता, महोबा तथा काकुन हनुमान मंदिर के महंत रमेश चंद्र गिरी जी द्वारा दीप प्रज्जवलन एवं सरस्वती प्रतिमा पर पुष्पांजलि के साथ प्रथम सत्र आरंभ हुआ। विद्यालय के विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत किए। उपस्थित अतिथियों का स्वागत संस्था के अध्यक्ष डॉ. धर्मजंग ने किया तथा संस्था के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र मिश्र ने संस्था की कार्य योजना और उद्देश्य के बारे में बताया।

उदघाटन सत्र में प्रो. सिद्घनाथ उपाध्याय ने मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक स्वच्छ पर्यावरण के महत्त्व एवं समाज के सभी लोगों के समेकित प्रयास की आवश्यकता पर बल देते हुए संस्था के वर्तमान प्रयासों की सराहना की।





प्रो. प्रदीप कुमार मिश्र ने जल संकट, भूजल के अत्यधिक दोहन तथा पारंपरिक जल स्रोतों के संरक्षण पर विचार रखते हुए संपोष्य विकास की आवश्यकता समझाई। डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ से आई प्रो. आद्याशक्ति राय ने शिक्षा के उद्देश्य, विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। आचार्य देवव्रत ने ध्यान, मौन और मोबाइल के विवेकपूर्ण उपयोग के संबंध में सुझाव दिए। अन्य वक्ताओं ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं, वृक्ष संरक्षण, प्रशासनिक सहयोग तथा पर्यावरण से जुड़ी सामाजिक चुनौतियों पर चर्चा की। बैंक अधिकारी श्री सुनील सिंह ने भारतीय साँस्कृतिक मूल्यों और पर्यावरण संरक्षण के सहसंबंध पर चर्चा की।

महोबा के पत्रकार श्री राजीव तिवारी ने सड़क निर्माण के दौरान वृक्षों की कटाई और हरित पट्टियों के विकास की आवश्यकता का मुद्दा उठाया। श्री अजय सुमन शुक्ला ने विद्यार्थियों के साथ संवाद किया। कक्षा छह की छात्रा सानिया ने प्लास्टिक प्रदूषण, पुनर्चक्रण तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग से संबंधित विचार प्रस्तुत किए, जिन्हें उपस्थित लोगों ने सराहा। प्रथम सत्र के अंत में काकुन हनुमान मंदिर के महंत जी ने पर्यावरण संरक्षण की पहल की प्रशंसा करते हुए सभी को इसके लिए प्रेरित किया। सत्र के अंत में समस्त लोगों को संस्था के उपाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार उपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र में, जिसकी अध्यक्षता प्रो. प्रदीप कुमार मिश्र ने की, संपोष्य विकास की अवधारणा को भारतीय दर्शन और प्रकृति के उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया। शिक्षकों के साथ संवाद के दौरान शिक्षा को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने पर चर्चा हुई। सचिव श्री धर्मेंद्र कुमार मिश्र ने ग्रामीण समाज की चुनौतियों, वृक्षों के आर्थिक महत्त्व, जैविक खाद्य पदार्थों, पलायन तथा निम्न आय वर्ग की समस्याओं पर विचार रखे। इस अवसर पर स्व रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए एक स्टार्टअप आरंभ करने और विद्यालय में नवाचार के लिए अनुदान जुटाने की घोषणा भी की गई।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस का शुभारंभ नवमी के पावन अवसर पर यज्ञ-हवन से हुआ। इसके बाद विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के साथ संवाद सत्र आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री अजय सुमन शुक्ला ने की। इस सत्र में डॉ. धर्मजंग ने पर्यावरण जागरुकता का प्रसार विद्यालय के विद्यार्थियों के माध्यम से करने के संदर्भ में उपस्थित शिक्षकों को महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए। श्री शुक्ला ने विद्यार्थियों को पर्यावरण सुधार से संबंधित परियोजना कार्य सौंपा और कक्षाओं में जाकर उनके कार्यों का

अवलोकन किया। विद्यार्थियों को तीन-तीन के समूह में कार्य करने के लिए कहा गया था, लेकिन अधिकांश विद्यार्थियों ने व्यक्तिगत रूप से काम करना पसंद किया। इस अनुभव से विद्यार्थियों में सामूहिकता और सहयोग की भावना विकसित करने की आवश्यकता सामने आई। डॉ. मुकेश उपाध्याय ने विद्यार्थियों के समग्र विकास के सन्दर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण परामर्श दिया जो दूरगामी रूप से संपोष्य विकास की अवधारणा को बल प्रदान करता है।

इसके पश्चात शिक्षकों एवं उपस्थित सदस्यों के बीच समाचार-पत्रों, पुस्तकालयों, नवीन प्रकाशित पुस्तकों और शैक्षणिक नवाचारों पर चर्चा हुई। इस बात पर बल दिया गया कि विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षक भी नियमित अध्ययन करें और नए ज्ञान से स्वयं को परिचित रखें जिससे वे पर्यावरण और विकास की भावी चुनौतियों को बेहतर ढंग से समझ सकें। शिक्षकों के लिए वाराणसी में अध्ययन एवं शैक्षणिक संवाद से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव भी सामने आया।

दो दिनों की इस कार्यशाला ने यह संदेश दिया कि संपोष्य विकास केवल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शिक्षा, सामाजिक सहभागिता, वैज्ञानिक सोच, सांस्कृतिक चेतना और आर्थिक संतुलन भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। विद्यार्थियों को व्यावहारिक गतिविधियों से जोड़ने, शिक्षकों में निरंतर अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित करने तथा स्थानीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को आगे बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया। यह कार्यशाला पर्यावरण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने और प्रकृति के अनुकूल जीवनशैली को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक पहल रही। उक्त द्वि-दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागिता करने वाले प्रमुख लोग थे- प्रो. सिद्घनाथ उपाध्याय, प्रो. प्रदीप कुमार मिश्र, श्री मनोज तिवारी, डॉ. धर्मेन्द्र मिश्र, डॉ. धर्मजंग, डॉ. मुकेश उपाध्याय, डॉ. प्रमोद सिंह, डॉ. आद्याशक्ति राय, श्री अजय सुमन, श्री अजीत प्रताप सिंह, श्री सुनील सिंह, श्री पंकज दीक्षित, श्री राकेश झा, श्री मधुकर मिश्र, आचार्य देवव्रत, श्री राजीव तिवारी, श्री मयंक त्रिपाठी, श्री कुलदीप मिश्र, श्री शिव सिंह, श्री गुलाब यादव, श्री गोविन्द, सुश्री सुनीता, सुश्री दीप्ति इत्यादि। इनके अलावा भावी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले युवा विद्यार्थियों ने उक्त कार्यशाला में अपनी सक्रिय प्रतिभागिता की। कार्यशाला के अंतिम सत्र में सभी उपस्थित सदस्यों और प्रतिभागियों ने वृक्षारोपण भी किया।







